क्या न करें

- घरेलू इलाज, ओझा, झोला छाप डॉक्टर या झाड़फूंक के चक्कर में न पड़ें।
- गांव के अप्रशिक्षित डॉक्टर या दवाई की दुकान से खरीद कर कोई भी दवाई बिना जांच के न दें।
- छोटे बच्चे को गोदी में न ले जाएं।
- ध्यान रहे, बच्चे को गाड़ी से अस्पताल ले जाते समय खराब रास्ते से न ले जाएं।
- बच्चे को सीधा न लिटाएं, करवट से लिटाएं। बेहोशी की अवस्था में मुंह से कुछ भी न पिलाएं।
- रोगी को एंबुलेंस से ले जाते समय सायरन व अन्य ध्वनि यंत्र (म्यूज़िक सिस्टम या मोबाइल फोन की रिंगटोन) न बजाएं।

समय पर इलाज करने से दिमागी बुखार पर पूरी तरह से काबू पाया जा सकता है।

तुरंत ब्लॉक या जिला के सरकारी अस्पताल में जाएं। यहां बच्चे के दिमागी बुखार का इलाज मुफ्त होता है। बच्चे को करवट से लिटाएं, बेहोशी की अवस्था में मुंह से पानी या कुछ भी न पिलाएं।

उपचार एवं देखभाल

कोई भी बुखार दिमागी बुखार हो सकता है। यह जानलेवा भी है।

बुखार आते ही बच्चे को तुरंत ब्लॉक या जिला के सरकारी अस्पताल पर ले जाएं।

अधिक जानकारी के लिए टोल फ्री नंबर **1800.180.5145** पर संपर्क करें या अपने नजदीकी प्राथमिक/सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र से जानकारी प्राप्त करें।

unicef for every child
PATH

दिमागी बुखार के लक्षण

प्रारंभिक अवस्था

- बुखार आना
- सिर दर्द होना
- उल्टी होना

गंभीर अवस्था

- मिरगी और झटके आना
- हाथ व पैर अकड़ जाना
- बच्चे का मानसिक और शारीरिक रुप से अपाहिज हो जाना
- मस्तिष्क संबंधी कई गंभीर समस्याएं होना

दिमागी बुखार का सही इलाज

क्या करें

1

- बुखार आते ही बच्चे को तुरंत ब्लॉक या जिला के सरकारी अस्पताल पर ले जाएं।

2

- बुखार को कम रखने के लिए बच्चे के सिर पर गीली पट्टी रखें।

3

- बच्चे को झटके या मिरगी जैसी गंभीर समस्या होने पर 108 पर फोन कर एंबुलेंस से अस्पताल ले जाएं।

4

- झटके आने पर बच्चे के मुंह में रुमाल या कपड़े का गोला बनाकर रखें, जिससे उसका जीभ न कटे।

5

- घर में बच्चे को झटका, दौरा या बेहोशी होने पर या आपातकालीन स्थिति में अस्पताल ले जाते समय उसे करवट से लिटाएं।
- एंबुलेंस को गड्ढ़ा से बचाकर धीरे-धीरे चलाएं ताकि मरीज को झटका न आए।

6

- बच्चे के ठीक होने तक उसका पूरा इलाज कराएं।
- 1 से 5 साल के बच्चों का टीकाकरण किया जाता है। इसलिए 5 साल तक के बच्चे को सभी टीके समय पर जरुर लगवाएं।